Toppersnotes®
Unleash the topper in you

RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

प्रारम्भिक एवं मुख्य परीक्षा

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग – 2

राजस्थान की कला एवं संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

RAS – PRE & MAINS

राजस्थान की कला एवं संस्कृति

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**राजस्थान की चित्रकला** • चित्रकला की विशेषताएँ • भित्ति चित्र • राजस्थान की लघु चित्रकला • राजस्थानी चित्रकला की शैलियाँ(भौगोलिक एवं सांस्कृतिक आधार पर) • राजस्थान की लोक-कला	1
2.	**राजस्थान के हस्तशिल्प** • राजस्थान में मूर्तिकला • गलीचे व दरिया • राजस्थान की कपड़ा कला • हैंड-ब्लॉक प्रिंट • राजस्थान में हस्तकला को बढावा देने के लिए किये गए प्रयास • राजस्थान की प्रमुख हस्तकला एवं क्षेत्र • राजस्थान में जी.आई. टैग	13
3.	**राजस्थानी भाषा और बोलियां** • राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति और विकास • राजस्थानी भाषा की मुख्य विशेषताएँ • राजस्थान की स्थानीय बोलियाँ • राजस्थानी भाषा एवं संवैधानिक दर्जा • राजस्थान भाषा के विकास के प्रयास	20
4.	**राजस्थान के प्रसिद्ध लोक गीत** • लोक गीतों का महत्व • शास्त्रीय संगीत एवं लोक गीतों में अंतर • राजस्थान के प्रमुख लोक गीत • लोक संगीत शैली • राजस्थान के विभिन्न संगीत स्कूल • राजस्थान के लोक गीतों की विशेषताएँ • राजस्थान के लोक संगीत वाद्य यंत्र यंत्र ○ तत्त वाद्य यंत्र ○ सुषिर वाद्य यंत्र ○ अवनद्ध वाद्य यंत्र ○ घन वाद्य यंत्र • लोक संगीत शैली • राजस्थान के विभिन्न संगीत स्कूल	26
5.	**लोक नृत्य** • राजस्थान के प्रमुख लोक नृत्य • जातीय एवं जनजातीय नृत्य • लोक नृत्यों की विशेषताएँ • लोक नृत्यों का महत्व • शास्त्रीय व लोक नृत्य के बीच अंतर	39

6.	**लोक नाट्य** • ख्याल • तमाशा • रम्मत • फड़ • स्वांग • गवरी (नृत्य नाट्य) • नौटंकी (भरतपुर) • भवई (नृत्य नाट्य) • गंधर्व • लीला नाट्य • चारबैंत (टोंक) • लोकनाट्य के विशेषताएँ	**47**
7.	**राजस्थान का साहित्य** • राजस्थान साहित्य का इतिहास एवं परम्परा • चारण साहित्य • राजस्थानी गद्य –पद्य की विशिष्ट शैलियाँ ○ ख्यात ○ वात/बात ○ वचनिका ○ दवावैत ○ विगत ○ रूपक ○ मरस्या ○ रासो ○ वेलि ○ प्रकास ○ तब्बा और बलवबोधी ○ परची ○ झमाल ○ झूलणा ○ साखी ○ सिलोका • आधुनिक राजस्थानी साहित्य • आधुनिक राजस्थानी साहित्य के महत्वपूर्ण ग्रंथ एवं पत्रिकाएँ • राजस्थान में साहित्य के विकास से संबंधित महत्वपूर्ण संस्थान • राजस्थानी भाषा में लिखे गए महत्वपूर्ण ग्रंथ	**52**
8.	**राजस्थान के संत एवं लोक देवी-देवता** • राजस्थान के भक्ति संत • लोक संत एंव उनके सम्प्रदाय • अन्य महत्वपूर्ण संप्रदाय • राजस्थान के लोक देवता • गोगा जी • रामदेव जी • देव नारायण जी • मेहाजी मांगळिया	**66**

	• हरभूजी (हडबू जी) • मल्लीनाथ जी • राजस्थान के अन्य लोक देवता • राजस्थान की लोक देवियाँ • लोक देवता और देवियों का संस्कृति में योगदान	
9.	**राजस्थान के मेंले और त्योहार** • श्रावण • भाद्रपद • आश्विन (आसोज) • कार्तिक • माघ • फाल्गुन • चैत्र • बैशाख • ज्येष्ठ • आषाढ़ • मुस्लिम समुदाय के त्योहार • जैनियों के त्योहार • सिक्खों के त्योहार • सिंधी समुदाय के त्योहार • ईसाइयों के त्योहार • राजस्थान के प्रमुख मेले एवं उत्सव • राजस्थान के प्रमुख महोत्सव • राजस्थान में मेले एवं त्योहारों का महत्व-	**82**
10.	**राजस्थान के आभूषण एवं वेशभूषा** • मुख्य आभूषण ○ स्त्रियों के आभूषण ○ पुरुषों के आभूषण • राजस्थानी वेशभूषा (परिधान) ○ स्त्रियों के वस्त्र ○ पुरुषों के वस्त्र ○ आदिवासियों के वस्त्र	**92**
11.	**राजस्थान स्थापत्य एवं शिल्प कला** • राजस्थान में नगर-विन्यास और शिल्प कला • दुर्ग शिल्प कला • दुर्गो का प्रकार • राजस्थान के प्रमुख दुर्ग/किले/महल ○ बावड़ियाँ ○ हवेलियाँ ○ प्रसिद्ध मीनारें ○ राजस्थान के मंदिर • लोक देवता और देवियों	**99**
12.	**राजस्थान के प्रमुख रीति-रिवाज एवं प्रथाएँ** • सोलह संस्कार • राजस्थान के विवाह संबंधित रीतिरिवाज- • राजस्थान में शौक या गम की रस्में	**122**

	• जन्म से सम्बंधित रीतिरिवाज- • राजस्थान के अन्य प्रमुख रीतिरस्म/रिवाज- • राजस्थान में प्रचलित प्रथा व कुरीतियाँ • राजस्थानी शब्दावली	

Dear Aspirant,

Thank you for making the right decision by choosing TopperNotes.

To use the QR codes in the book, Please follow the below steps:-

To install the app, scan the QR Code with your mobile phone camera or Google Lens

RAS Prepartion APP by ToppersNotes

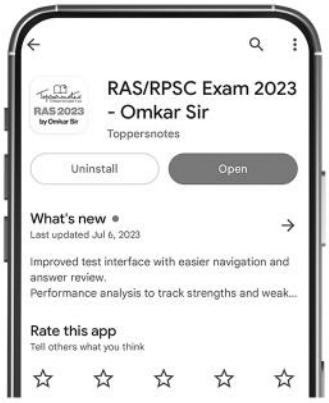

Download the app from Google Play Store

To Login **enter your Phone Number**

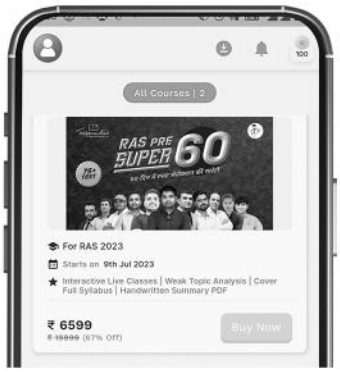

Choose your **Course**

Click on **SCAN QR**

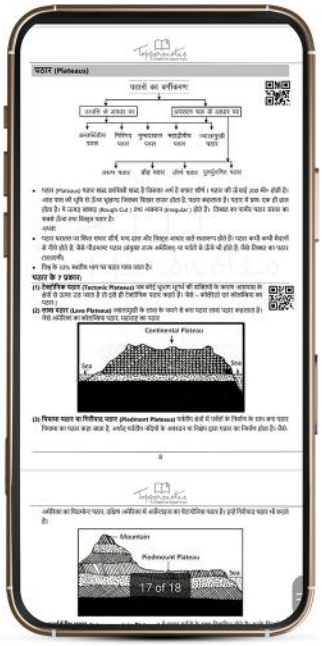

Choose any **QR CODE from book**

For any technical help,
write us at **hello@toppersnotes.com** or
whatsapp on 7665641122.

1
CHAPTER

राजस्थान की चित्रकला

- प्राचीन भारतीय ग्रंथों में चित्रकला का उल्लेख 64 कलाओं में से 1 के रूप में किया गया है।
- भारत में चित्रकला के दो अलग-अलग खंड हैं-
  - भित्ति चित्र या दीवार चित्रकला
  - लघु पेंटिंग।
- भारतीय चित्रकला में राजस्थानी चित्रकला का विशिष्ट स्थान है, उसका अपना एक अलग स्वरूप है।
- सम्पन्न चित्रकला की तरफ सर्वप्रथम ध्यान प्रसिद्ध **कलाविद् आनन्द कुमारस्वामी** (1916) ने अपनी पुस्तक '**राजपूत पेंटिंग**' में दिलाया।
  - कुछ उपलब्ध चित्रों के आधार पर कुमारस्वामी तथा ब्राउन जैसे विद्वानों ने यह धारणा बनाई कि राजस्थानी शैली, राजपूत शैली तथा नाथद्वारा शैली के चित्र उदयपुर शैली से हैं।
  - परिणामस्वरूप राजस्थानी शैली का स्वतंत्र अस्तित्व बहुत दिनों तक स्वीकार नहीं किया जा सका।
- खंडालवाला की रचना **ठलीवस फ्रॉम राजस्थान** ने पहली बार विद्वानों का ध्यान यहाँ की चित्रकला की खास पहलुओं की तरफ खींचा और स्पष्ट मुगल प्रभावों को दर्शाता है।
- **राजस्थानी शैली** (शुरू में राजपूत शैली के रूप में जाना गया) का प्रादुर्भाव 15वीं सदीं में **अपभ्रंश शैली** से हुआ।

राजस्थानी चित्रकला की विशेषताएँ

- **प्राचीनता-** राजस्थानी चित्रकला का इतिहास अति प्राचीन है।
  - सूर्य, चाँद, पशुपति, पहाड़, ग्राम व प्रकृति आदि के चित्र मिलते हैं।
- **भारतीयता-** विशेष भारतीय शैली और भारतीयता की छाप इसके प्रत्येक चित्र में परिलक्षित होती है।
- **कलात्मकता-** कलात्मकता की झलक मिलती है क्योंकि इसकी शैली में अजन्ता शैली का समन्वय है।
  - मध्यकाल में मुगल शैली के सम्मिश्रण ने इसे एक नया रूप दिया।
- **रंग वैशिष्ट्य-** रंगों का जादू विशेष उल्लेखनीय है। लाल, पीला, श्वेत एवं हरा इस शैली के प्रमुख रंग है ।
  - चटकीले, चमकदार और दीप्तियुक्त रंगों का संयोजन शैली में विशिष्ट है।
- **लोक जीवन का सानिध्य-** भित्ति चित्रण में लोक जीवन की भावनाओं का बाहुल्य है।
- **भाव-प्रवरता का प्राचुर्य-** रस-प्रधान - भावनाओं व भक्ति और श्रृंगार तथा राधाकृष्ण की माधुर्य भावना का सजीव चित्रण राजस्थानी चित्रकला की प्रमुख विशेषता है।
- **विषय वस्तु का वैविध्य-** विषय की दृष्टि से अत्यधिक विस्तृत।
  - राधाकृष्ण की विभिन्न लीलाओं, रामकथा, महाभारत और भागवत पुराण की विभिन्न कथाएँ, नायक नायिका, भेद, राग-रागिनी, बारह-मासा, तुवर्णन, दरबारी जीवन, उत्सव, शिकार, राजा रानियो का चित्रांकन, लोक कथाएँ आदि असंख्य विषयों पर राजस्थानी चित्रकला आधारित है।
  - काव्य का चित्रण - निजी विशेषता ।
  - विषयों को लेकर इतने चित्र उपलब्ध है कि वे सभी एक जीवित संसार प्रस्तुत करते हैं।
- **देशकाल की अनुरूपता-** राजस्थानी चित्रकला में राजपूत सभ्यता और संस्कृति तथा तात्कालीन परिस्थिति का चित्रण।
  - दुर्ग, प्रासाद, हवेलियाँ, दरबार आदि का राजपूती वैभव एव भक्ति काल और रीति काल का सजीव चित्रण राजस्थानी चित्रकला में ही पाया जाता है।
- **प्राकृतिक परिवेश की अनुरूपता-** प्राकृतिक सरोवर, वन-उपवन, पेड़-पौधे, फूल-पत्तियाँ, पक्षियों से भरे हुए निकुंज, मृग, मयूर, सिंह, हाथी आदि का सजीव चित्रांकन।
- **नारी सौंदर्य-** नारी सुन्दरता विशिष्ट ।
  - भारतीय नारी के सौंदर्य को उभारने में महत्वपूर्ण योगदान ।
  - नायिकाओं के आभूषण, अंग प्रत्यंग, नासिका और नेत्रों के अंकन अत्यन्त कलापूर्ण चित्रित।

राजस्थानी चित्रकला की मुख्य विशेषताएँ -

- प्राचीनता, व्यापकता एवं कलात्मकता
- रंगात्मकता (रंगों की विविधता)
- नारी सौन्दर्यता (बनी-ठनी)
- प्राकृतिक अलंकरण
- विषयवस्तु की विविधता, ऐतिहासिक, वीर रस, श्रृंगार रस, शिकार एवं युद्ध दरबारी, पशुओं का चित्रण
- देशकाल की अनुरूपता ।
- आकृतियों का विन्यास राजस्थानी चित्रकला की महत्त्वपूर्ण विशेषता है

  नोट- राजस्थानी चित्रकला के चित्रों में चित्रकार का नाम अंकित नहीं है ।

भित्ति चित्र

- किसी भी कलाकृति को सीधे दीवार, छत या अन्य बड़ी स्थायी सतह पर चित्रित किया जाता है या लगाया जाता है।
- किसी दिए गए स्थान के स्थापत्य तत्वों को चित्र में सामंजस्यपूर्ण रूप से शामिल किया गया है।

फ्रेस्को बूनो

- ताजी पलस्तर की नम हुई भित्ति पर किये गये चित्रण को 'फ्रेस्को बुनो' चित्रण कहते है।
- इस पद्धति को राजस्थान में **'आरायश या आलागीला 'पद्धति'** भी कहा जाता है।
- अकबर और जहाँगीर के समय में **आलागीला या आरायश पद्धति इटली से लायी गयी** ।
- जयपुर के राजाओं के मुगलों से प्रगाढ़ संबंधों के कारण यह कला जयपुर पहुँची।
- **शेखावाटी क्षेत्र में इसे 'पणा'** के नाम से जाना जाता है।

शेखावाटी के भित्तिचित्र

- शेखावाटी को भित्ति चित्रों के कारण इसे **ओपन आर्ट गैलेरी** कहा जाता है।
- बड़े-बड़े हाथी और घोड़ों तथा चोबदारों, चँवर-धारणियों का लोक - कलात्मक अंकन, गवाक्षों के दोनों ओर की दीवारों पर अंकन इन हवेलियों की विशेषता रही है।
- जयपुर शैली के भित्ति चित्रांकन का सर्वाधिक प्रभाव शेखावटी पर पड़ा है।
- उन्नीसवीं सदी के मध्य से लेकर बीसवीं सदी प्रारंभ तक शेखावाटी के श्रेष्ठीजनों ने विशाल हवेलियाँ निर्मित कर इस कला को प्रोत्साहन एवं प्रश्रय दिया।
- नवलगढ़, रामगढ़ फतेहपुर लक्ष्मणगढ़ मुकुन्दगढ़, मंडावा, बिसाऊ आदि स्थानों का भित्ति चित्रण अनूठा हैं।
- इन भित्ति चित्रों के कारण शेखावाटी को **'ओपन आर्ट गैलेरी'** कहा जाता है

शेखावाटी भित्ति चित्रों की विशेषताएँ

- **बड़े-बड़े हाथी और घोड़ों, चोबदारों, चंदर-धारणियों का अंकन, गवाक्षों के दोनों** ओर की दीवारों पर अंकन इन हवेलियों की विशेषताएँ हैं।
- **छज्जे के नीचे टोड़ों के मध्य में** चितेरों ने अपनी सूझबूझ के अनुसार **मल्लयुद्ध, कुश्ती, दधिमथन, गौ-दोहन, विचित्र पशु-पक्षियों, देवी मिथकों, राक्षसों, कामकला, रागरागिनी, साधुसंतों, लोककथाओं का** विशेष अंकन किया है।
- हवेलियों की **बाह्य दीवारों एवं अंदर कथात्मक बड़े-बड़े फलकों का चित्रांकन** शेखावाटी शैली की विशेष देन है।
- शेखावाटी के भित्ति चित्रण में **कत्थई, नीले व गुलाबी रंग की प्रधानता** है।
- किन्तु अब इस अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर का क्षरण हो रहा है। फ्रांस के नदीन ला प्रैन्स ने फतेहपुर की हवेलियों के भित्ति चित्रों के संरक्षण के सन्दर्भ में सराहनीय कार्य कर एक मिसाल पेश की है।

दू फ्रेस्को

- इसमें सतह की गीली दीवार पर चित्रकला की जाती है ताकि रंगद्रव्य दीवार की सतह के अंदर गहराई तक चले जाएँ।
- ताजा बिछाए गए या गीले चूने के प्लास्टर पर भित्ति चित्र बनाने की तकनीक है।
- पिगमेंट को प्लास्टर में मिलाने के लिए पानी का उपयोग किया जाता है।
- प्लास्टर के साथ, पेंटिंग दीवार का एक अभिन्न अंग बन जाती है।

टेम्पोरा या फ्रेस्को-सेको

- चूने के प्लास्टर वाली सतह पर पेंटिंग की विधि जिसे पहले सूखने दिया जाता है और फिर ताजे चूने के पानी से भिगोया जाता है।

राजस्थान की लघु चित्रकला

- बेस्लीग्रे - राजस्थानी चित्रकला के लिए **"राजपूत चित्रकला विद्यालय"** का नाम दिया ।
- **विषय-** रामायण और महाभारत आदि की घटनाएँ, कृष्ण का जीवन, सुंदर परिदृश्य इत्यादि।
- कीमती पत्थरों, सोने और चाँदी का इस्तेमाल
- मुगल प्रभाव
- भारतीय राजस्थानी चित्रों में चौरापंचिका समूह शैली का प्रभुत्व।

राजस्थानी चित्रकला की शैलियाँ (भौगोलिक एवं सांस्कृतिक आधार पर)

मेवाड़ शैली	चावंड शैली, उदयपुर शैली, नाथद्वारा शैली, देवगढ़ उपशैली, सावर उपशैली, शाहपुरा उपशैली तथा बनेड़ा, बागौर, बेगू केलवा आदि ठिकाणों की कला।
मारवाड़ शैली	जोधपुर शैली, बीकानेर शैली, किशनगढ़ शैली, अजमेर शैली, नागौर शैली, सिरोही शैली, जैसलमेर शैली तथा घाणेराव, रियाँ, भिणाय, जूनियाँ आदि ठिकाणा कला।
हाड़ौती शैली	कोटा, बूँदी और झालावाड़ शैलियाँ
ढूँढाड़ शैली	आमेर शैली, जयपुर शैली, शेखावाटी शैली, अलवर शैली उनियारा उपशैली तथा झिलाय, ईसरदा, शाहपुरा, सामोद आदि ठिकाणा कला ।

मेवाड़ शैली

- राजस्थानी चित्रकला का प्रारम्भिक और मौलिक रूप मेवाड़ शैली में मिलता है।
- मेवाड़ शैली के अंतर्गत पोथी ग्रंथों का अधिक चित्रण हुआ है।
- 1260 ई. का श्रावकप्रतिक्रमणसूत्रचूर्णि नामक चित्रित ग्रन्थ इस शैली का प्रथम उदाहरण है जो तेजसिंह के राज्यकाल में चित्रित हुआ।
- यही शैली **1423 ई. की देलवाड़ा** में लिखी गयी **सुपासनाह चरियम पुस्तक** में दिखायी देती है।
- **डगलस बैरेट एवं बेंसिल** ने **चौरपंचाशिका शैली का उद्गम** मेवाड़ में माना है।
- महाराणा कुंभा का काल कलाओं के उत्थान की दृष्टि से स्वर्णिम युग माना जाता है।
- उदयसिंह (1535-1572 ई.) के काल में बने चित्रों में **भागवत पुराण का परिजात अवतरण (1540 ई.)** मेवाड़ के चित्रकार **नानाराम की कृति** है।
- महाराणा प्रताप के समय छप्पन की पहाड़ियों में स्थित **राजधानी चावण्ड में भी चित्रकला** का विकास हुआ।
- इस काल की **प्रसिद्ध कृति ढोलामारू (1592 ई.)** है जो राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में सुरक्षित हैं ।
- इसके बाद महाराणा अमरसिंह- । (1572-1620), कर्णसिंह और जगतसिंह-। (1628-52 ई.) के दौरान मेवाड़ शैली विकसित हुई।
- सुस्पष्ट आरेखण और रंग चमकीले

- चित्रकला का पाठ एक पीले रंग के आधार के ऊपर काले रंग में लिखा जाता है।
- नूरुद्दीन - कालिया दमन (सबसे प्रसिद्ध चित्रकला) - महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय (1710-34 ई.) के शासनकाल के दौरान।
- **प्रसिद्ध चित्रकार** - नूरुद्दीन, मनोहर, साहिबदीन, कृपाराम, जीवाराम आदि।

चित्रकार	चित्रित ग्रंथ	पोषक राजा
• हीरानंद	• सुपासनह चरित्रम	• महाराणा मोकल
• साहिबदीन	• रागमाला, गीत गोविन्द, रसिक प्रिया	• जगत सिंह-1
• मनोहर व साहिबदीन	• आर्ष रामायण	• जगत सिंह-1
• साहिबदीन	• शूकर क्षेत्र महात्म्य, भ्रमर गीत सार	• महाराणा राजसिंह
• जगन्नाथ	• बिहारी सतसई	• संग्राम सिंह - II
• कमलचंद्र	• 'श्रावक प्रतिक्रमण चूर्णि'	• रावल तेजसिंह
• धनसार	• कल्पसूत्र	• महाराणा लाखा

विशेषताएँ

- स्वस्थ और आकर्षक कद में पुरुषों और महिलाओं की उपस्थिति।
- नुकीली नाक, गोल चेहरा, बड़ी आँखें, छोटी गर्दन, खुले होंठ।
- आकर्षक मूंछें, कोमल शरीर वाली महिलाओं की सजावटी आकृतियाँ।
- प्रकृति का सुंदर प्रदर्शन।

प्रमुख उपशैलियाँ

उदयपुर (मेवाड़) उपशैली

- **प्रमुख शासक –** महाराणा जगतसिंह प्रथम।
- **प्रमुख चित्रित ग्रन्थ –** महाराणा तेजसिंह के काल में रचित **'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी (1260) एवं सुपासनाहचरित(1423)', गीत गोविंद आख्यायिका, 'रामायण शूकर'** आदि।
- **प्रमुख चित्रकार – साहिबदीन, मनोहर, कृपाराम**, उमरा, गंगाराम, भैरोराम, शिवदत्त आदि।
- **प्रमुख रंग –** पीला एवं लाल रंग।
- **प्रमुख आकृति व वेशभूषा –** गठीला शरीर, लम्बी मूँछें, छोटा कद, विशाल नयन, सिर पर पगड़ी, कमर में पटका, लंबा घेरदार जामा, कानों में मोती।
- **नारी आकृति व वेशभूषा –** मीनाकृत आँखे, गरूड़ सी लंबी नाक, ठिगना कद, लम्बी वेणी, लहंगा एवं पारदर्शक ओढ़नी।
- **विशेष तथ्य –** महाराणा **अमरसिंह प्रथम के समय मेवाड़ शैली पर मुगल प्रभाव** ।
- गुर्जर व जैन शैली का सर्वाधिक प्रभाव है।
- बादल युक्त नीला आकाश, कदंब के वृक्ष, हाथी, कोयल, सारस एवं मछलियों का अधिक चित्रण ।
- महाराणा **जगतसिंह प्रथम** - राजमहल में **'चितेरो की ओवरी'** नाम से कला विद्यालय स्थापित करवाया ।
  - इसे **'तस्वीरां रो कारखानों'** के नाम से जाना जाता है।

नाथद्वारा उपशैली/राजसिंह शैली

- मेवाड़ शैली का दूसरा प्रमुख दौर नाथद्वारा शैली में दिखाई देता है।
- नाथद्वारा में पुष्टिमार्गीय सम्प्रदाय की भारत प्रसिद्ध प्रमुख पीठ है, जो श्रीनाथजी की भक्ति का प्रमुख केन्द्र होने के कारण मेवाड़ की चित्र परम्परा में नया अध्याय जोड़ता है।
- यह उदयपुर शैली एवं ब्रजशैली का समन्वित रूप है।
- नाथद्वारा शैली की मौलिक देन श्रीनाथजी के स्वरूप के पीछे सज्जा के लिए बड़े आकार के कपड़े के पर्दे पर बनाए गए चित्र **'पिछवाईयों** के नाम से जाने गए।

पिछवाई

(RAS MAINS 2016)

- मंदिरों में मूर्ति के पीछे की दीवारों को ढकने वाले **कपड़े पर बनाई गई सुंदर चित्रकारी** पिछवाई कहलाती है।
- इसमें अधिकांश चित्र **भगवान कृष्ण के जीवन से** उद्धृत किये गये हैं।
- राजस्थान में पिछवाई कला का विकास 1700 ई. के आसपास माना जाता है।
- 18वीं सदी के इन चित्रों में कृष्ण चरित्र की बहुलता के कारण यशोदा, नन्द, बाल- ग्वाल, गोपियाँ तथा वल्लभ संप्रदाय के संतों का चित्रांकन विशेष रूप से हुआ है।
- **इसमें हरे पीले रंगों का अधिक** प्रयोग हुआ है।
- वल्लभ सम्प्रदाय के मंदिरों में विशेष रूप से प्रचलित पिछवाई चित्रकारी के प्रमुख केन्द्र नाथद्वारा, अलवर, जोधपुर, बूँदी, उदयपुर व बीकानेर है।
- इस कला के चर्चित चित्रकार कलाकारों में **लच्छीराम (कोटा), घनश्याम निम्बाई, स्व. रामगोपाल विजयवर्गीय व कैलाश शर्मा प्र**मुख है।

- इसकी अन्य विशेषताओं में केन्द्र में श्रीनाथजी की आकृति गायों का मनोरम दृश्य, आसमान में देवताओं का अंकन पृष्ठभूमि में सघन वनस्पति, कदली वृक्षों की प्रधानता आदि है।
- **प्रमुख शासक –** महाराणा राजसिंह।
- **प्रमुख चित्रित ग्रंथ –** कृष्ण लीला, श्रीनाथ जी के विग्रह, ग्वाल-बाल, गोपियों आदि के चित्र प्रमुखतः मिलते हैं।

- **प्रमुख चित्रकार – बाबा रामचंद्र** के अतिरिक्त **नारायण, चतुर्भुज, रामलिंग, चम्पालाल, घासीराम, तुलसीराम** आदि के नाम भी प्रसिद्ध हैं। महिला चित्रकारों में **कमला एवं इलायची** का नाम मिलता है।
- **प्रमुख रंग –** हरा एवं पीला।
- **पुरुष आकृति व वेशभूषा –** पुरुषों में पुष्ट कलेवर, नंद एवं बालगोपालों का भावपूर्ण चित्रण।
- **नारी आकृति व वेशभूषा –** छोटा कद, तिरछी एवं चकोर के समान आँखें, शारीरिक स्थूलता एवं भावों में वात्सल्य की झलक।
- **विशेष तथ्य –** पिछवाई एवं भित्ति चित्रण प्रमुख।
- गाय, केले के वृक्षों की प्रधानता।

देवगढ़ उपशैली

- **प्रमुख विषय –** शिकार के दृश्य, राजसी ठाट-बाट, श्रृंगार, प्राकृतिक दृश्य।
- **प्रमुख चित्रकार –** कँवला, चोखा, बैजनाथ ,हरचंद , नंगा, बगता आदि ।
- **प्रमुख रंग –** पीले रंगों का बाहुल्य।
- **विशेष तथ्य –** यह शैली मारवाड़, जयपुर व मेवाड़ की समन्वित शैली है।
- **इस शैली के भित्ति चित्र –**औजार की ओवरी और मोती महल
- इस शैली को सर्वप्रथम **डॉ. श्रीधर अंधरे** ने प्रकाशित किया।
    - महाराणा जयसिंह - **रावत द्वारिका दास चूंडावत** - देवगढ़ ठिकाना (राजसमंद) ने 1680 ई. में स्थापित की। तदुपरान्त देवगढ़ शैली का जन्म हुआ।

चावण्ड उपशैली

- **प्रमुख शासक –** महाराणा प्रताप (विकसित) एवं महाराजा अमरसिंह (स्वर्णकाल)।
- **प्रमुख चित्रकार –** नसीरुद्दीन (निसारदीन)।
- **प्रमुख चित्रित ग्रन्थ –** 'रागमाला'(**1605 ई. में अमरसिंह के काल में**) ।

रागमाला – राणा अमरसिंह प्रथम के काल में 1605 ई. में 'रागमाला' के चित्र चावंड शैली में निर्मित हुए | इन चित्रों को निसारदीन ने चित्रित किया ।

मारवाड़ शैली

प्रमुख उपशैलियाँ

जोधपुर उपशैली

- **प्रमुख शासक –** महाराजा जसवंतसिंह एवं महाराजा मानसिंह।
- **प्रमुख चित्रित ग्रंथ –** 'सूरसागर' व 'रसिकप्रिया' पर आधारित 'दुर्गा सप्तरानी'।
- **प्रमुख चित्रकार –** नारायणदास, अमरदास, बिशनदास, शिवदास, रतन जी भाटी , देवदास , कालू, छोटू , नाथा, रामा, जीतमल आदि ।
- **प्रमुख रंग –** पीला।
- **पुरुष आकृति –** धनुष के समान बड़ी आँखें, घनी दाढ़ी-मूँछें, लंबा व गठीला बदन, मोटी गर्दन, ऊँची पगड़ी, तुर्रा कलंगी, मोती की माला, ऊँट व घोड़े पर सवार पुरुष।
- **नारी आकृति –** गठीला बदन, काले-लम्बे बाल, बादाम जैसी आँखे, पतली लंबी अंगुलियाँ, पतली कमर, कान तक भौंहे आदि।
- **विशेष तथ्य –प्रेम आख्यान पर** आधारित एवं स्वतंत्र रूप से **'राव मालदेव'** के समय विकसित।
- आम के वृक्ष, ऊँट, घोड़े एवं कुत्तों को प्रमुखता दी है।

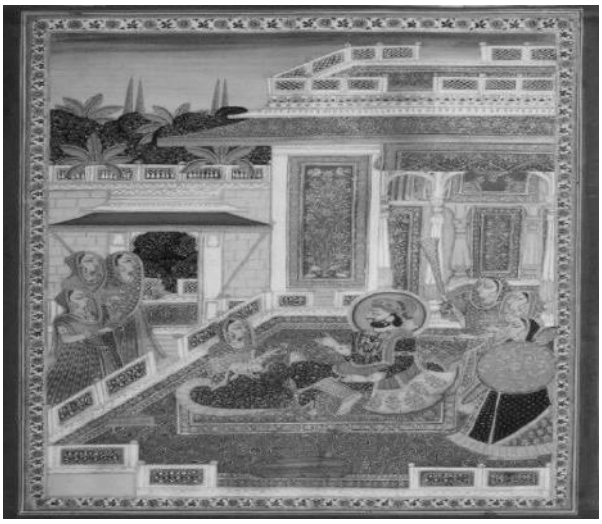

रागमाला-चित्रावली

- 1632 ई. में वीर विट्ठल दास चंपावत द्वारा चित्रित।
- राजा गजसिंह प्रथम के समय।
- कबूतर उड़ाती स्त्री, पेड़ की डाल पकड़कर झूलती हुई स्त्री का चित्रण।
- महाराजा मानसिंह के समय रसराज ग्रन्थ पर आधारित 62 चित्रों की एक महत्वपूर्ण श्रृंखला बनी।
- नाथ सम्प्रदाय की पारम्परिक जीवन शैली का चित्रण प्रधान विषय रहें।

चित्र –

- ढोला मारू, ढोला मरवण री बात
- जेठवा-उजली मूमलदे-निहालदे
- वेलि किसन रूकमनीरी, छोटी झोपड़ियाँ
- नाथ चिरित्र पंचतंत्र
- रूपमति बाज बहादूर, मरू के टीले ।

बीकानेर उपशैली

- **प्रमुख शासक –** महाराजा अनूपसिंह।
- बीकानेर शैली का विशुद्ध रूप **अनूपसिंह** के राज्यकाल में दिखाई देता है।
- उनके समय के प्रसिद्ध कलाकारों में रामलाल, अलीरजा, हसन आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।
- महाराजा अनूपसिंह के समय में उस्ता परिवार ने हिन्दू कथाओं, संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी काव्यों को आधार बनाकर सैकड़ों चित्र बनाये। इस समय यह शैली चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई।

बीकानेर शैली में मुगल स्कूल के मिश्रित प्रभाव

- इकहरी तन्वंगी कोमल ललनाओं का अंकन
- नीले, हरे और लाल, बैंगनी, जामुनी, सलेटी रंगों का प्रयोग,
- शाहजहाँ और औरंगजेब शैली की पगड़ियों के साथ ऊँची मारवाड़ी पगड़ियाँ,
- ऊँट, हिरण, बीकानेरी रहन-सहन और राजपूती संस्कृति की छाप विशिष्ट रूप से देखने को मिलती है।
- बरसते बादलों में से सारस-मिथनों की नयनाभिराम आकृतियाँ भी इसी शैली की विशेषता है।
- यहाँ फव्वारों, दरबार के दृश्यों आदि में दक्षिण शैली का प्रभाव दिखाई देता।
- **प्रमुख चित्रित ग्रंथ व विषय –** रसिक प्रिया, बारहमासा, रागरागिनी, कृष्णलीला, शिकार, सामंती वैभव आदि।
- **प्रमुख चित्रकार –** मुन्नालाल, मुकुंद, रूकनुद्दीन, अलीरजा, उस्ता आसीर खाँ।
- **प्रमुख रंग –** पीला रंग।
- **पुरुष आकृति –** उग्र पुरुषाकृति, दाढ़ी मूंछों से युक्त मुख, ऊँची शिखराकार पगड़ी, फैले हुए जामें, पीठ पर ढाल और हाथ में भाले लिए हुए चित्रित।
- **नारी आकृति –** लंबी नायिकाएँ, लंबी नाक, पतले अधर, मृगनयनी, उन्नव ग्रीवा।
- कमल समान आँखें, तंग चोली, घेरदार घाघरे, पारदर्शी ओढ़नी एवं मोतियों के सुसज्जित आभूषण।
- **विशेष तथ्य –** इस शैली का प्रारंभिक चित्र महाराजा रायसिंह के समय चित्रित 'भागवत पुराण' ग्रंथ है ।
- मुगल, जैन स्कूल एवं दक्षिण शैली का प्रभाव ।
- बीकानेर चित्रशैली में आम, ऊँट एवं घोड़ों के चित्रण मुख्य।
- प्रमुख आधार– सामन्ती वैभव का चित्रण ।
- **मथैरणा व उस्ता कलाकारों** ने पल्लवित और पुष्पित किया।
- रायसिंह के समय उस्ता अलीराजा तथा उस्ता हामिद रूकनुद्दीन मुख्य चित्रकार थे।
- बीकानेर के राजकीय संग्रहालय में जर्मन चित्रकार ए.एच.मूलर द्वारा चित्रित यथार्थवादी शैली के चित्र रखे गये।

किशनगढ़ उपशैली (RAS MAINS 2016)

- **प्रमुख शासक –** राजा सावंतसिंह 'नागरीदास'।
- **प्रमुख चित्रित ग्रंथ व विषय** – बणी-ठणी, चाँदनी रात की संगीत गोष्ठी, गीत गोविंद, भगवान गीत आदि पर आधारित चित्र।
- **प्रमुख चित्रकार –** निहालचंद, सूरध्वज, मोरध्वज, भंवरलाल, लाडलीदास, छोटू, अमीरचंद, धन्ना।
- **प्रमुख रंग –** सफेद एवं गुलाबी।
- **पुरुष आकृति –** छरहरें पुरुष, पतले अधर, लंबी बाँहे, लंबी ग्रीवा, उन्नत ललाट, मादक भाव युक्त नेत्र, कमर में दुपट्टा।
- **नारी आकृति –** कमल एवं खंजन सी काली आँखें, चाप के समान लंबी भृकुटि, लंबी व सुराहीदार गर्दन, दीर्घ नाक, लंबे बाल, लम्बी नायिकाएँ, लँहगा, चोली एवं पारदर्शी आँचल से सज्जित।
- **विशेष तथ्य –** इस शैली को प्रकाश में लाने का श्रेय **विद्वान एरिक डिक्सन एवं डॉ. फैयाज अली** को जाता है।
- प्रमुख विशेषता - **'नारी सौन्दर्य' है।**
- यह **कांगड़ा शैली एवं ब्रज साहित्य** से प्रभावित है।
- प्रमुख चित्र - **'बणी-ठणी'** ।
- चाँदनी रात की संगोष्ठी - चित्रकार अमीरचन्द द्वारा सावंतसिंह के समय बनाया गया चित्र।
- वेसरि (नाक का आभूषण) - अनोखा व प्रमुख आभूषण।
- बिहारी चिन्द्रिका रत्नावली, रसिक रत्नावली और मनोरथ मंजरी आदि काव्यों की सावंतसिंह ने रचना की।
- भित्ति चित्रण व रागरागिनी चित्रण इस शैली में उपलब्ध नहीं है।

बणी-ठणी'-

- किशनगढ़ उपशैली से
- चित्रकार – निहालचंद
- संरक्षण – सावंतसिंह के द्वारा
- एरिक डिक्सन ने **'भारत की मोनालिसा** ' कहा
- 1973 ई. में भारत डाक टिकट जारी ।

अजमेर उपशैली

- जनियाँ का चाँद, सावर का तैययब**,** नाँद का रामसिंह भाटी,. खरवा से जालजी एवं नारायण भाटी**,** मसूदा से माधोजी एवं राम तथा अजमेर के अल्लाबक्स**, उस्ता और साहिबा स्त्री चित्रकार** विशेष उल्लेखनीय है।
- **जूनियाँ के चाँद द्वारा** अंकित **'राजा पाबूजी' का सन्** 1698 का व्यक्ति-चित्र इस शैली सुन्दर उदाहरण है।
- यही एक ऐसी कलम रही जिसको **हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई धर्म को समान** प्रश्रय मिला।
- **प्रमुख चित्रकार –** चाँद, नबला, तैयव, रायसिंह, लालजी व नारायण भाटी एवं एक महिला चित्रकार साहिबा।
- **प्रमुख रंग –** सुहानी रंग योजना (लाल, पीले, हरे, नीले के साथ बैंगनी रंग का विशेष प्रयोग होता है।)
- **प्रमुख आकृति –** लंबे एवं वीरोचित गुणों से युक्त पुरुष, गोल आँखें, लंबी जुल्फें, बाँकी एवं छल्लेदार मूँछे।
- **नारी आकृति –** आकर्षक महिलाएँ, लंबे, घने एवं काले बाल, पैनी अंगुलियाँ, लहंगा, बसेड़ा एवं आकर्षक आभूषण।

जैसलमेर उपशैली

- जैसलमेर शैली की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इस पर **मुगल या जोधपुर शैली का प्रभाव नहीं** है ।
- यह **एकदम स्थानीय** शैली है।
- **प्रमुख शासक –** महारावल हरराज, अखैसिंह व मूलराज।
- **प्रमुख चित्र –** मूमल।
- **पुरुष आकृति –** पुरुषों के मुख पर दाढ़ी-मूंछें तथा मुखाकृति ओज व वीरता से पूर्ण।
- **नारी आकृति –** खिंचे हुए यौवन दीप्ति से परिपूर्ण मुख।

नागौर उपशैली

- नागौर उपशैली में लकड़ी के कंवाड़ों एवं किले के भित्ति-चित्रण में मारवाड़ शैली का प्रभाव दिखाई पड़ता है।
- **'वृद्धावस्था के चित्रों को** नागौर के चित्रकारों ने अत्यन्त कुशलतापूर्वक चित्रित किया है।
- **पारदर्शी वेशभूषा** नागौर शैली की अपनी विशेषता है।
- **प्रमुख चित्र एवं विषय –** जोधपुर, बीकानेर, अजमेर, मुगल एवं दक्षिण शैलियों का मिश्रित रूप।
- **प्रमुख रंग –** इस शैली में बुझे हुये रंगों का प्रयोग अधिक मिलता है।
- **नारी आकृति –** लंबी नाक, छोटी आँख, चपटे ललाट वाली नायिका।
- पारदर्शी वेशभूषा इस शैली की अनूठी विशेषता है।
- **विशेष तथ्य –** मारवाड़ शैली का दूसरा प्रमुख केन्द्र।
- व्यक्ति चित्रण की परम्परा।
- शैली का सही और सर्वाधिक स्वरूप नागौर किले के महलों के भित्ति चित्रों में।
- नागौर किले में भित्ति चित्रों की सजावट राजा बख्तसिंह के समय।

घाणेराव उपशैली

- जोधपुर के दक्षिण में स्थित गोडवाड़ भूखण्ड **में एक प्रमुख ठिकाना** है।
- चित्रकार **नारायण, छज्जू एवं कृपाराम ने नवीन चित्र शैली का** निर्माण किया,
- जिससे घाणेराव को मारवाड़ की एक उपशैली के रूप में महत्त्व दिया जा सकता है।

ढूँढ़ाड़ शैली

- केवल जयपुर शहर तक ही सीमित नहीं, बल्कि इसके आस-पास के नगरों में भी विस्तृत है ।

प्रमुख उपशैलियाँ

जयपुर उपशैली

- महाराजा सवाई जयसिंह प्रथम का काल स्वर्ण काल माना जाता है ।
- उन्होंने अपने राजचिन्हों, कोषों, रोजमर्रा की वस्तुएँ, कला का खजाना, साज-सामान आदि को सुव्यवस्थित ढंग से संचालित करने हेतु 'छत्तीस कारखानों की स्थापना की, जिनमें 'सूरतखाना' भी एक है।

> **सूरतखाना**'- यहाँ चित्रकार चित्रों का निर्माण करते थे। महाराजा **सवाई ईश्वरीसिंह के समय** चित्र सृजन का केन्द्र (सूरतखाना) आमेर से हट कर जयपुर आ गया।

- इसी समय में **'रसिकप्रिया', 'कविप्रिया', 'गीत-गोविन्द', 'बारहमासा', 'नवरस' और 'रागमाला'** चित्रों का निर्माण हुआ।
- इनके समय में **साहिबराम और लालचन्द नामक चित्रकारों** ने प्रशंसनीय कार्य किया।
- **साहिबराम** ने **बड़े व्यक्ति चित्र (आदमकद-पोट्रेट) बनाकर** चित्रकला में नयी परम्परा डाली।(**ईश्वरी सिंह के काल में**)
- **लालचन्द** ने **जानवरों की लड़ाइयों के अनेक चित्र** बनाये।
- **सवाई माधोसिंह प्रथम** के समय कलाकारों ने चित्रों में रंगों को न भरकर मोती, लाख तथा लकड़ी की मणियों को चिपकाकर रीतिकालीन अलंकारिक मणिकुट्टिम प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया।
- **सवाई माधोसिंह** प्रथम के समय **गलता के मंदिरों, सिसोदिया रानी के महल, चन्द्रमहल, पुण्डरीक की हवेली में कलात्मक** भित्ति चित्रण हुआ।
- **लाल चितेरा** महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह तथा महाराजा सवाई माधोसिंह के समय का एक प्रमुख चित्रकार था।
- **महाराजा सवाई प्रतापसिंह के समय** -रामसेवक, गोपाल, हकमा, चिमना, सालिगराम, लक्ष्मण आदि प्रमुख चित्रकार थे।
- इस समय **राधाकृष्ण की लीलाओं, नायिका भेद, रागरागिनी, बारहमासा** आदि चित्रों कि प्रधानता है।
- महाराजा सवाई रामसिंह ने कला के विकास के लिये **'महाराजा स्कूल आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स' की सन् 1857** ई. में स्थापना की, जो वर्तमान में **राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स'** के नाम से जाना जाता है।
- राजस्थान में सर्वप्रथम **आलागीला पद्धति का प्रारम्भ आमेर में** हुआ जो **कच्छवाहा-मुगल संबंधों के प्रभाव** का परिणाम था।
- **जयपुर शैली का प्रभाव** ईसरदा, सिवाड़, झिलाय, उणियारा, चौमू, सामौद, मालपुरा जैसे ठिकानों पर भी रहा, जिससे वहाँ ठिकाना पेंटिंग विकसित होती रही।
- **प्रमुख चित्रित ग्रंथ –** आदमकद चित्र, शिकार, युद्ध प्रसंग, कृष्ण लीला, रागमाला, महाभारत, रामायण, गीत-गोविंद पर आधारित चित्र।
- **प्रमुख चित्रकर –** साहिबराम, मोहम्मद शाह, सालिगराम, रामजीदास, रघुनाथ, लालचंद, गंगाबख्श।
- **प्रमुख रंग –** केसरिया, पीला, हरा एवं लाल रंग।
- **पुरुष आकृति –** चेहरा साफ, हाथ में तलवार, पगड़ी, कुर्ता, जामा, चोगा, अंगरखी, पटका एवं जूते पहने हुए।
- **स्त्री आकृति –** बड़ी मछली जैसी आँखे, लंबे बाल, अंडाकार चेहरा, उठी हुई भौहे, छोटा कद, चोली, कुर्ता, दुपट्टा, बेसर, लहंगा, कामदार जूतियाँ पहने हुए।
- **विशेष तथ्य –** मुख्य विशेषता - आदमकद, बड़े पोट्रेट एवं भित्ति चित्रण है।
- साहिबराम ने ईश्वरी सिंह का आदमकद चित्र बनाया।
- **'मुगल शैली' का सर्वाधिक** प्रभाव है।
- पीपल, बड़, घोड़ा व मयूर एवं नीले बादलों का अंकन मुख्य विशेषता है।
- चाँदी, सोना, जस्ता व मोतियों का प्रयोग।
- असावरी रागिनी-जयपुर शैली का शबरी का चित्र जिसमें उसके केंशों, अल्प कपड़ों व चन्दन के वृक्षों का चित्रण है।

अलवर उपशैली

- **राव राजा प्रतापसिंह** -अलवर शैली सन् **1775 ई. में जयपुर से अलग होकर** स्वतंत्र अस्तित्व में आयी।
- उनके शासनकाल में **'शिवकुमार' और 'डालूराम'** नामक **दो चित्रकार जयपुर से अलवर** आये।
- राजगढ़ के किले के **'शीशमहल'** में अंकित भित्ति चित्र उन्हीं के समय में बने । ये भित्ति चित्र अलवर शैली के प्रारंभिक सर्वोत्कृष्ट चित्र हैं।
- **बख्तावरसिंह** -चित्रकला की शुरुआत- (राजगढ़ के महलों में शीशमहल का चित्रण कराकर) ।

- प्रमुख चित्रकार - **बलदेव, डालूराम, सालगा एवं सालिगराम** उनके राज्य के प्रमुख चितेरे थे।
- बख्तावरसिंह के समय में बने सैकड़ों चित्र जिनमें नाथों, जोगियों, फकीरों से जंगल में धर्म-चर्चा करते हुये स्वयं महाराज का चित्रण कला की दृष्टि से उल्लेखनीय है।
- **विनयसिंह** -इनका अलवर की चित्रकला के उत्कर्ष में वही स्थान है, जो मुगल चित्रकला में अकबर का था।
- विनयसिंह **बलदेव से चित्रकारी** सीखते थे।
- **'गुलिस्तां' का सुलेखन एवं चित्रांकन** उनके शासनकाल की एक अनोखी घटना है। इसके चित्र **बलदेव व गुलामअली** ने बनाये।
- **बलवन्तसिंह के समय** में सालिगराम, **जमनादास, छोटेलाल, बकसाराम, नन्दराम** आदि कलाकारों ने जमकर **पोथी चित्रों,** लघुचित्रों एवं लिपटवाँ पटचित्रों का निर्माण किया।

(RAS PRE 2018)

- **शिवदान सिंह** के शासनकाल में कामकला के आधार पर निर्मित सैकड़ों चित्र चित्रकला की दृष्टि से उत्कृष्ट हैं।
- **'नफीरी वादन' का चित्र** इस शैली का सुन्दर उदाहरण है।
- **महाराजा मंगलसिंह के शासनकाल** में **मूलचंद तथा उदयराम** ने विशेषतः **हाथीदाँत के फलकों पर सूक्ष्म चित्रण** किया।
- **महाराजा जयसिंह के** शासनकाल में **रामगोपाल, रामप्रसाद, जगमोहन, रामसहाय नेपालिया** जैसे कलाकारों ने अलवर शैली को अंतिम समय तक जीवित रखा।
- **प्रमुख शासक –** महाराजा विनयसिंह।
- **प्रमुख चित्रित ग्रंथ एवं विषय –** 'चंडी पाठ' एवं 'दुर्गा सप्तशती- पं. कृष्ण चरित्र, रामचरित्र, दरबार, संगीत, नायिकाएँ आदि।
  - प्रमुख विषय- योगासन।
- **प्रमुख चित्रकार –** डालचंद, नानगराम, बलदेव, बुधराम, गुलामअली, सालगा।
- **प्रमुख रंग –** हरे, नीले एवं सुनहरे रंगों का प्रयोग।
- **पुरुष आकृति –** पुरुषों के मुख की आकृति आम की शक्ल में बनाई गयी है। गले में रूमाल, कमर तक अंगरखा एवं जयपुर जैसी पगड़ी।
- **नारी आकृति –** मछली के समान आँखे, पान की पीक से सने होंठ, कमान की तरह तनी हुई भौहे, गोल मुँह, ठिगना कद ,उठी हुई वेणियाँ, अत्यधिक परिश्रम से बनाये गये अंग-प्रत्यंग आदि।

विशेषताएँ

- सबसे प्रमुख विशेषता - **'गणिकाओं के चित्र'** ।
- बॉर्डर चित्रण के लिए प्रसिद्ध ।
- ईरानी, मुगल एवं जयपुरी शैली का समन्वित रूप।
- चिकने रंगों का प्रयोग ।
- योगासन का चित्रण ।
- लघु चित्रण ।

आमेर उपशैली

- आमेर शैली के प्रारंभिक काल के चित्रित ग्रंथों में **यशोधरा चरित्र (1591** ई.) नामक ग्रंथ प्रमुख है।
- इसी समय में बनी **रज्मनामा (1588 ई.) की प्रति** अकबर के लिये **जयपुर सूरतखाने में ही तैयार** की गई थी।
- इसमें **169 बड़े आकार के चित्र** हैं एवं जयपुर के चित्रकारों का भी उल्लेख मिलता है।
- बैराठ के तथाकथित **मुगल गार्डन और मौजमाबाद** के भित्ति चित्र भी इस शैली में निर्मित है जिन पर मुगल प्रभाव साफ दिखाई देता है।
- आमेर चित्रशैली का **दूसरा महत्वपूर्ण चरण मिर्जा राजा जयसिंह (1621-1667 ई.)** के राज्यकाल से प्रारम्भ होता है।
- मिर्जा राजा जयसिंह ने **'रसिकप्रिया' और 'कृष्ण रुक्मिणी वेलि'** नामक ग्रंथ अपनी **रानी चन्द्रावती** के लिये सन् 1639 ई. में बनवाये थे।
- इसमें **कृष्ण और गोपियों का युगल स्वरूप** लोक शैली में चित्रित है।
- आमेर में ही मिर्जा राजा जयसिंह ने 1639 ई. **में गणेश पोल का निर्माण करवाया जो भित्तिचित्रों व अलंकरणों से सुसज्जित** हैं।
- **प्रमुख शासक –** मानसिंह एवं मिर्जा राजा जयसिंह।
- **प्रमुख चित्रित ग्रंथ एवं विषय** – आदिपुराण, रज्मनामा, भागवत, यशोधर चरित्र आदि ग्रंथ एवं बिहारी सतसई पर आधारित चित्र।
- **प्रमुख चित्रकार –** हुकुमचंद, मन्नालाल, पुष्पदत्त, मुरली।
- **प्रमुख रंग –** कालूस, सफेदा, हिरमिच, गेरू, खड़ी आदि प्राकृतिक रंगों का प्रयोग।
- **विशेष तथ्य –** इस शैली पर 'मुगल शैली' का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा है।
- इस शैली की समृद्ध परम्परा भित्तिचित्रों के रूप में उपलब्ध होती है।

उणियारा उपशैली

- **नरूका ठिकाने के वंश** ने इस शैली के विकास का मार्ग प्रशस्त किया।
- रावराजा **सरदारसिंह** ने **धीमा, मीरबक्स, काशी, रामलखन, भीम** आदि कलाकारों को आश्रय प्रदान किया।
- **'राम-सीता, लक्ष्मण व हनुमान' मीरबक्स द्वारा** चित्रित उनियारा शैली का उत्कृष्ट चित्र है।
- उनियारा शैली पर बूँदी और जयपुर का समन्वित प्रभाव दिखाई देता है।

हाड़ौती स्कूल

- राजस्थान के बूँदी, कोटा और झालावाड़ क्षेत्र पर चौहानवंशी हाड़ाओं का प्रभुत्व है इसलिए यह क्षेत्र हाड़ौती क्षेत्र कहलाया।

प्रमुख उपशैलियाँ

कोटा उपशैली

- **प्रमुख शासक –** महाराव रामसिंह (प्रारम्भ), महारावल भीमसिंह प्रथम, महाराव शत्रुशाल।
- सर्वाधिक चित्रण **'महाराव उम्मेदसिंह प्रथम'** के काल में (**स्वर्णकाल**)।
- **प्रमुख चित्रित ग्रंथ एवं विषय –** भागवत पुराण, ढोला-मारू, दरबारी दृश्य, शिकार, हाथियों के युद्ध , बारहमासा, राग रागिनियाँ, बड़े देवता की हवेली और युद्ध निदर्शन ।

- **प्रमुख चित्रकार –** डालू, लच्छीराम, नूर मोहम्मद, रघुनाथ, हेमराज जोशी, गोविंदराम।
- **मुख रंग –** हल्के रंग, पीला एवं नीला रंग।
- **पुरुष आकृति –** उन्नत भौह, बड़ी दाढ़ी मूँछ, तलवार और कटार आदि हथियारी से युक्त वेशभूषा, मोतियों से जुड़े आभूषण पहने हुए।
- **स्त्री आकृति –** गोल चेहरा, छोटी गर्दन, सुदीर्घ नासिका, मृग से नयन, क्षीण कटि, छोटा कद, मोटा शरीर।

विशेष तथ्य –

- कोटा शैली का स्वतंत्र अस्तित्व 'महाराव रामसिंह' के समय में स्थापित हुआ।
- रानियों, शिकार करते हुए भी चित्रित है ।
- हल्के रंग, पीला एवं नीला रंग।
- शिकार दृश्यों का अंकन तथा नारी सौन्दर्य का सजीव चित्रण।
- **भित्ति चित्रण की प्रमुखता**
- यहाँ की झाला हवेलियाँ विशेष आकर्षण का केन्द्र है।
- 1768 ई. - **डालूराम नामक** चित्रकार द्वारा चित्रित **रागमाला सैट** कोटा चित्रकला का सर्वाधिक बड़ा चित्र है। (महाराव गुमान सिंह के समय)

बूँदी उपशैली (RAS MAINS 2016)

- चित्रकला की बूँदी शैली मेवाड़ चित्रकला से प्रभावित थी।
- **प्रमुख शासक –** राव भावसिंह।
- चित्रों का रेखांकन '**रावसुरजनसिंह**' के समय हुआ।
- **प्रमुख चित्रित ग्रंथ एवं विषय –** राग रागिनी, नायिका भेद, बारहमासा, रसिकप्रिया, सामंती परिवेश का चित्रांकन, शिकार, हाथियों के युद्ध , घुड़दौड़, रागरंग, मतिराम के रसराज पर आधारित चित्रण, सामंती परिवेश का विस्तृत चित्रांकन, वर्षा में नाचता मोर, पेड़ों की छाया में बैठे शिकारी, फव्वारों के पास विचरण करते प्रेमी युगल।
- **प्रमुख रंग –** हरा रंग।
- **प्रमुख चित्रकार**-सुरजन, अहमदअली, रामलाल, श्री किशन, डालू, भीखराज और साधुराम मुख्य थे।

- **पुरुष आकृति –** लंबा पतला शरीर, बडी मूँछ, गोलाकार ललाट, अरूणिमा युक्त झुकी पगड़ियाँ, घुटने तक लंबे पारदर्शक जामें।
- **स्त्री आकृति –** गोल मुख, कमल के समान आँखे, छोटी गर्दन, लंबी बाँहे, पतला शरीर, लाल एवं पारदर्शक चुनरी।

विशेष तथ्य

- जिसमें भावनाओं की सरलता, प्रकृति की विविधता, पशु-पक्षियों तथा सतरंगे बादलों, जलाशयों आदि के चित्रण की बहुलता दृष्टिगत होती है। ।
- आकाश में उमड़ते हुए काले कजरारे मेघ, बिजली की कौंध, घनघोर वर्षा, नदी में उठती जल तरंगें, हरे-भरे वृक्ष और उन पर चहकती चिड़ियाँ, नाचते मयूर एवं कलाबाजी दिखाते वानर तथा पहाड़ की तलहटी में विचरण करते वन्य-जीवों का चित्रण बड़ा ही मनोहारी है।
- बूँदी शैली में पशु-पक्षी चित्रण को विशेष महत्त्व दिया गया है।
- स्थापत्य का राजपूती वैभव और श्वे लाबी, लाल हिंगलू, हरा आदि रंगों का प्रयोग बूँदी कलम की विशेषता रही है।
- रेखाओं का सर्वाधिक अंकन
- ईरानी, दक्षिणी, मराठा एवं मेवाड़ शैली से प्रभावित।
- मुख्यतः सरोवर, केले एवं खजूर के वृक्षों का चित्रण।
- राव रतनसिंह को चित्रकला प्रेम के कारण जहाँगीर ने सर बुलन्दराय की उपाधि प्रदान की।
- शत्रुशाल (छत्रशाल) (1631-58 ई.) द्वारा **निर्मित रंगमहल भित्ति चित्रण** के लिए प्रसिद्ध ।
- **महाराव उम्मेदसिंह के शासन काल** में चित्रकला का **अत्यधिक विकास** हुआ।
- महाराव विशनसिंह के समय शेरों के शिकार के चित्र बने।

दुगारी उपशैली

- नैनवा (बूँदी) के पास स्थित सीताराम मंदिर की चित्रशाला में चित्रांकित शैली।
- चित्रों में स्वर्णकलम का प्रयोग, भगवान राम केन्द्रित चित्र प्रधानता।
- वनस्पति रंग की प्रधानता वाली शैली।
- प्रमुख चित्र मत्स्यावतार व कश्यपावतार।

चित्रकला के विकास हेतु कार्यरत संस्थाएँ

संस्था का नाम	स्थान
चितेरा, धोराँ	जोधपुर
टखमण-28, तूलिका कलाकार परिषद्	उदयपुर
आयाम, कलावृत्त	जयपुर
क्रिएटिव आर्टिस्ट ग्रुप, पैग	जयपुर

प्रमुख चित्रकला शैलियाँ एवं चित्रकार- एक दृष्टि में

चित्रकला शैली	मुख कलाकार
मेवाड़ या उदयपुर शैली	साहिबदीन, धनसार, मनोहर, कृपाराम, उमरा, नसीरुद्दीन, हीरानन्द जीवा, अमरा, नगा शिवदयाल शाहजी मि. रघुनाथ, शिवा, भोपा प्रमुख थे।
नाथद्वारा उपशैली	**महिला चित्रकार** 'कमला, इलायची **पुरुष चित्रकार** श्रीरामचन्द्र बाबा, भगवान, नारायण,

	चतुर्भुज, रामलिंग, घासीराम, उदयराम, देवकृष्ण, चंपालाल तुलसी, हरदेव, रालाल, बिठुल आदि।
शाहपुरा उपशैली	**श्रीलाल जोशी, दुर्गालाल जोशी**
देवगढ़ उपशैली	कंवला प्रथम, बगता, कंवला द्वितीय, हरचंद, **नंगा, चोखा, बैजनाथ**
चावंड उपशैली	**निसारदीन (निसरुद्दीन**)
जोधपुर (मारवाड़) शैली	भाटी अमरदास, दानाभाटी, जीतमल, विशनदास, भाटी शिवदास, समा, सेफु, नाथो, वीरजी, रतनजी भाटी, छज्जू, फेजअली, उदयराम, कालूराम, मतिराम, किशनदास, देवदास, बभूत, नारायण दास, रामसिंह भाटी, लादूनाथ, सरताज सतिदास, शंकरदास, माधोदासा।
बीकानेर शैली	**हमीद रुक्नुद्दीन, मुसव्विर रुकनुद्दीन, उस्ता आसीर खाँ, साहिबदीन, मुन्नालाल**, मुकुर, कायम, कासिम, अहमद अली, अबु हमीद, अली रजा मुराद, नाथू, रामलाल, चन्दूलाल, जयकिशन, रामकिशन, शाह मोहम्मद, जीवन, शिवराम जोशी, मेघराज।
किशनगढ़ शैली	सूरध्वज, **मोरध्वज, निहालचंद, भँवरलाल, लालीदास**, अमरु, सूरजमल, बदनसिंह, तुलसीदास, सीताराम, नानकराम, रामनाथ, **मूलराज, भीकचन्द**, जोश, सवाईराम, अमीरचंद, धन्ना, छोटू, सूरतराम।
अजमेर शैली	चाँद, तैयब, नवला, रामसिंह, लालजी व नारायण, भाटी, माधोनी, राम, अल्लाबखरा एवं **उस्ता, साहिबा (महिला चित्रकार**)
जयपुर शैली	मुहम्मद शाह, साहिबराम, सालिगराम, घासी, रामजीदास, रघुनाथ, लालचंद, गंगाबक्श,**हुक्मा, रामसेवक, चिमना, गोपाल, जीवन, निरंजन**, दयाराम, राजू, उदय, लक्ष्मण, सीताराम, रामदीन, राधाकिशन, फेडुला, होरा, मंगला, केसू, मन्ना, उस्तालाला, सांवला, गजा, हरिनारायण, गोपाल, गोविन्दा, शिवदासं, गोविन्दराम आदि।
अलवर शैली	डालूराम, नानकराम, बलदेव, गुलामअली, शिवकुमार, बुद्धराम, सालिगराम, जमनादास, छोटेलाल, नंदराम, बकसाराम, मूलचंद, जगन्नाथ, रामगोपाल, जगमोहन, रामप्रसाद, रामसहाय नेपालिया आदि।
आमेर शैली	**हुकुमचन्द, मुरली, मन्नालाल,** पुष्पदत्त।
उणियारा शैली	धीमा, मीरबख्श, काशीराम, बख्ता।
बूँदी शैली	अहमद अली, रघुनाथ, गोविंदराज, डालू, लच्छीराम, नूरमोहम्मद, सुरजन, रामलाल, श्रीकिशन एवं साधुराम ।
कोटा शैली	रघुनाथ, गोविन्दराम, डालू, लच्छी राम, नूर मोहम्मद, कन्हैया ब्राह्मण।

महत्वपूर्ण तथ्य

चित्रण	चित्रकला शैली का प्रकार
कदंभ का पेड़	उदयपुर शैली
केले का पेड़	किशनगढ़ शैली
खजूर	कोटा, बूँदी शैली
पीपल का पेड़	अलवर, जयपुर शैली
आम का पेड़	जोधपुर, बीकानेर शैली
कौआ, चील, घोड़ा, ऊँट	जोधपुर, बीकानेर शैली
हाथी और चकोर	उदयपुर शैली
मोर, घोड़ा	अलवर, जयपुर शैली
गाय	नाथद्वारा शैली
मछली की तरह आँख	उदयपुर, जयपुर शैली
हिरण की तरह आँख	नाथद्वारा शैली
धनुष के आकार की आँखें	किशनगढ़ शैली
बादाम के आकार की आँखें	जोधपुर शैली
आँखों की ऊपरी और निचली रेखाएँ समानांतर	बूँदी शैली
पीला	मारवाड़, देवगढ़, बीकानेर
पीले-हरे	नाथद्वारा शैली
सफेद- गुलाबी	किशनगढ़ शैली
पीला-लाल	मेवाड़ शैली
पीला-लाल-हरा-बैंगनी	अजमेर शैली
पीला-हरा-नीला	कोटा शैली
लाल-पीले-हरे	बूँदी शैली
केसरिया-हरा-लाल	जयपुर शैली

राजस्थान की लोक कला

- आम इंसान के द्वारा बिना किसी ताम-झाम व प्रदर्शन से जब **अपनी स्वाभाविक कलाकारी को चित्र, संगीत, नृत्य आदि के रूप में पेश** किया जाता है, तो वह लोक कला कहलाती है।
- वास्तव में लोक कला ही संस्कृति की वास्तविक वाहक व प्रस्तुतकर्ता होती है।

राजस्थान की प्रमुख लोक कलाएँ

सांझी

- सांझी **दशहरे से पूर्व श्राद्ध-पक्ष में** बनाई जाती है।
- कुंवारी कन्याएँ सफेदी से पुती दीवारों पर पन्द्रह दिन लगातार गोबर से आकार उकेरती हैं व उसका पूजन करती हैं। **इसे सांझी, संझुली, सांझुली, सिंझी, सांझ के हाँजी, हाँज्या** आदि कई नामों से जाना जाता है।
- कन्याएँ गोबर से रेखाओं को उकेरकर उनमें काँच के टुकड़े, मोती, चूड़ी, कौड़ी, पत्थर, पंख, कपड़ा, कागज, लाख, फूल-पत्तियाँ आदि के प्रयोग द्वारा एक दमकती हुई रंगीन चित्ताकर्षक आकृति बनाती हैं।
- सांझी को **माता पार्वती का रूप मान कर** अच्छे वर, घर की कामना के लिए कन्याएँ पूजन करती हैं।
- पहले दिन से दसवें दिन तक एक या दो प्रतीक ही प्रतिदिन बनाए जाते हैं, किन्तु अंतिम पाँच दिन बहुत बड़े आकारों में सांझी की रचना की जाती है, **जिसे संझ्या कोट** कहते हैं।
- **पहले दिन** सूर्य, चन्द्रमा, तारे, **दूसरे दि**न पाँच फूल, **तीसरे दिन** पंखी, **चौथे दिन** हाथी सवार**, पाँचवें दिन** चौपड़, **छठे दिन** स्वास्तिक, **सातवें दिन** घेवर, **आठवें दि**न ढोलक या नगाड़े**, नवें दिन** बन्दनवार व **दसवें दिन** खजूर का पेड़ बनाया जाता है।
- आखिरी पाँच दिन संझ्या कोट में बीचों-बीच सबसे बड़े आकार में सांझी माता व मानव, पशु-पक्षी, प्रकृति आदि का चित्रण किया जाता है।

मांडणा

- मांडणे **दीवारों को अलंकृत** करने के लिए बनाये जाते हैं।
- घर की **देहरी, चौखट, आंगन, चबूतरा, चौक, घड़ा रखने का स्थान, पूजन**-स्थल आदि पर ये मांडणे अंकित किये जाते हैं।
- विवाह पर गणेशजी, लक्ष्मीजी के पैर, स्वास्तिक आदि के साथ ही गलीचा, मोर-मोरनी, गमले, कलियाँ, बन्दनवार, बच्चे के जन्म पर गलीचा, फूल, स्वास्तिक, रक्षाबंधन पर श्रवणकुमार, गणगौर पर गुणों (एक मिठाई) का जोड़, घेवर, लहरिया, तीज पर भी घेवर, लहरिया, चौक, फूल, बगीचा आदि विशेष रूप से बनाये जाते हैं।
- यदि कोई तीर्थयात्रा कर सकुशल घर लौट आता है तो इस खुशी में **'पुष्कर पेड़ी' तथा 'पथवारी' मांडी** जाती है।
- माण्डणों में **त्रिकोण, चतुष्कोण, षट्कोण, अष्टकोण, वृत्त** आदि आकृतियाँ भी बनाई जाती हैं।
- ये मांडणे अत्यन्त सरल होते हुए भी अमूर्त व ज्यामितीय शैली का अद्भुत सम्मिश्रण हैं।

फड़

- **भीलवाड़ा के शाहपुरा कस्बे में** छीपा जाति के जोशी चितेरों द्वारा पट-चित्रण किया जाता है, जिसे राजस्थानी भाषा में **'फड़'** कहा जाता है।
- भीलवाड़ा निवासी **श्रीलाल जोशी** इस शैली के प्रमुख चित्रकार
- **फड़ भोपों के लिए निर्मित** की जाती है। ये भोपे फड़ को लकड़ी पर लपेट कर गाँव-गाँव जाकर पारम्परिक वस्त्रों में **रावण हत्था या जन्तर वाद्य-यंत्र की धुन के साथ** कदम थिरकाते हुए **इसका वाचन** करते हैं ।
- यह लोक नाट्य, गायन, वादन, मौखिक साहित्य, चित्रकला व लोकधर्म का एक अनूठा संगम हैं।
- इसमें **लोक देवताओं के जीवन के अनेकों प्रसंगों व उनसे संबंधित चमत्कारों** को चित्रित किया जाता है।
- चित्रों में प्रमुखाकृति को सबसे बड़ा बनाया जाता है। अन्य आकृतियाँ उसके अनुपात में कहीं छोटी बनाई।
- रंगों का प्रतीकात्मक प्रयोग **भावों की अभिव्यक्ति में सहायक** है, जैसे-देवियाँ नीली, देव लाल, राक्षस काले, साधु सफेद या पीले हैं और सिन्दूरी व लाल रंग शौर्य व वीरता के प्रतीक हैं।

देवनारायण की फड़

- यह **सबसे पुरानी, सर्वाधिक चित्रांकन** वाली फड़ ।
- **सर्वाधिक लम्बी** गाथा वाली फड़ है **जो गुर्जर भोपे** द्वारा गायी जाती है।
- जिसके चित्रांकन में सर्प का चित्र तथा इनकी घोड़ी लीलागर को हरे रंग से चित्रित किया जाता है।
- 2 सितम्बर, 1992 को देवनारायण की फड़ पर **पाँच रुपये का डाक टिकट** जारी किया गया।

फड का निर्माण

- फड़ के लिए सर्वप्रथम मोटे हाथकते दो सूती कपड़ों (रेजी या रेजा) **पर गेहूँ या चावल के मांड में गोंद मिला कर कलफ लगाया** जाता है।
- सतह तैयार होने पर **उसे घोट कर समतल किया** जाता है।
- इस **पर पाँच या सात रंगों से चित्रण** किया जाता है।
- रंगों **में गेरू, हिरमिच, जंगाल, हरताल, प्योड़ी, सिन्दूर, हिंगुल, काजल, चूना व नील** आदि का प्रयोग किया जाता है।
- सर्वप्रथम **सिन्दूरी रंग शरीर में**, **फिर हरा व लाल रंग कपड़ों में**, भूरा वास्तु निर्माण में एवं अंतिम रेखाए(खुलाई) केवल काले रंग से की जाती है

पाबूजी की फड़ **(सबसे प्रसिद्ध फड़)**

पाने

- राजस्थान में विभिन्न उत्सवों व त्योहारों पर **देवी-देवताओं के कागज पर बने चित्र** (पाने) प्रतिष्ठापित किये जाते हैं।
- राजस्थान में गणेशजी, लक्ष्मीजी, रामदेवजी, गोगाजी, श्रवण कुमार, तेजाजी, राम, कृष्ण, शिव-पार्वती, धर्मराज, देवनारायणजी, श्रीनाथजी, नृसिंह आदि के पाने प्रचलित हैं।
- **श्रीनाथजी का पाना इनमें सर्वाधिक कलात्मक** है, जिसमें **चौबीस शृंगारों का चित्रण** होता है।

कावड़

- **चित्तौड़गढ़ जिले के बस्सी गाँव के खैरादियों का पुश्तैनी** व्यवसाय है।
- यहाँ के पारम्परिक कलाकार **मांगीलाल मिस्त्री ने** अपनी कावड़-परम्परा को सुरक्षित रखते हुए कई नये प्रयोग किये हैं।
- कावड़ जनजीवन की **धार्मिक आस्थाओं और विश्वासों से जुड़ी** है इसीलिए इसका वाचन-श्रवण कर लोग श्रद्धाभिभूत हो जाते हैं और मनमाना दान करते हैं।
- कावड़ एक **मंदिरनुमा काष्ठकलाकृति** है, **जिसमें --**
  - **कई द्वार बने** होते हैं। सभी द्वारों या कपाटों पर **चित्र अंकित** रहते हैं।
  - कथा **वाचन के साथ-साथ ये कपाट खुलते** जाते हैं और अंत में राम, लक्ष्मण व सीता जी होती हैं।
  - कावड **लाल रंग से रंगी** जाती है व उसके ऊपर फिर काले रंग से पौराणिक कथाओं का चित्रांकन किया जाता है।
  - इनमें **महाभारत, रामायण, कृष्ण लीला के** विभिन्न चरित्रों व घटनाओं का विवरण होता है।
  - साथ ही शनि, हनुमान, ब्रह्मा, लक्ष्मी, गरुड़ व लोक-देवताओं जैसे-पाबूजी रामदेवजी, हरिशचन्द्र, गोपीचन्द भरथरी को कथानुसार कावड़ में चित्रित करते हैं।

गोड़लिया

- चुराये गये पशुओं की शिनाख्त के अतिरिक्त सामान्य पहचान के लिये उनके शरीर पर आकृतियों के बड़े कलात्मक दाग दिये जाते हैं। ये दागने की क्रिया **अटेरना** तथा दाग के निशान **गोड़लिया** कहलाते हैं।
- पशुओं के ये चिन्ह कहीं **जाति विशेष** के, कहीं **अंचल विशेष के तो कहीं विशिष्ट राजघराने** के प्रतीक हैं।
- दागने के इन चिन्हों में प्रकृति के विविध उपादान, धार्मिक आस्थाओं के प्रतीक चिन्ह, मानवाकृतियों, विविध कृषि उपकरण तथा दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं के विभिन्न आंकों का समावेश मिलता है।
- ये दाग लोहे के सरिये, मिट्टी की ढकनी, लोहे पीतल के अक्षर अथवा किसी वृक्ष विशेष की डाली को गर्म कर दागे जाते हैं।

मेहंदी

- राजस्थान में मेहंदी प्राचीन काल से प्रचलन में है।
- सोजत व मालवा की मेहंदी मारवाड़ में बहुत प्रसिद्ध है।
- मेहंदी स्त्रियों द्वारा विवाह, सगाई, बच्चे के जन्म, विविध पूजनों व शुभ कार्यों में लगायी जाती है।
- मेहंदी में विविध प्रकार के अलंकरण बनाये जाते हैं।
- इनमें दीपावली पर पान, हटड़ी की भाँत, शंख, पगल्या (लक्ष्मी जी के पैर), सोलह दीपक, सुदर्शन, चक्र व मकर संक्रांति पर घेवर, बीजणी, करवा चौथ पर छबड़ी, स्वास्तिक, रक्षाबन्धन पर लहरिया, चीक व शादी पर तोरण, कैरी, सिंघाड़ा, स्वास्तिक, कलश, फूल आदि प्रमुख है।
- **नोट- सोजत की महेंदी को भौगोलिक पहचान का दर्जा दिया गया है।**

गोदना

- किसी **तीखे औजार से शरीर के ऊपर की चमड़ी** खोदकर उसमें काला रंग भरने से चमड़ी में पक्का निशान बन जाता है जिसे गोदना कहते हैं।
- आदिवासी लोगों में गोदने गुदवाने का अधिक शोक रहा है।
- **पर्याप्त धन व आभूषणों के अभाव में शरीर** के विविध अंगों पर गोदने गुदवाकर वे अपनी सौन्दर्य-भावना को संतुष्ट करते हैं।
- स्त्रियाँ **ललाट पर चांद, तिलक, आड़** गुदवाती हैं। आँखों को तीर के समान पैनी दर्शाने हेतु नीचे की पलक के साथ **'सार्या'** गुदवाती हैं।
- धार्मिक प्रतीक जैसे राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान, स्वास्तिक, कलश, ओम व त्रिशूल, पशु-पक्षी, फूल-पत्तियों व वृक्षों, दैनिक कार्यों में काम आने वाली वस्तुएँ गुदवायी जाती हैं।

कोठियाँ

- ग्रामीण क्षेत्रों में **भण्डारण हेतु कलात्मकता** कोठियाँ निर्मित की जाती हैं।
- कोठियाँ **चिकनी मिट्टी की सहायता** से बनाकर उन पर विभिन्न प्रकार की जाली, झरोखे, कंगूरे, देवी-देवता, जीव-जन्तु, बेल-बूंटे तथा मांडणे उभारे जाते हैं।
- इन कोठे-कोठियों में अन्न के अतिरिक्त दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुएँ जैसे- घी, दूध, दही आदि रखे जाते थे।

वील

- **पश्चिमी राजस्थान** के ग्रामीण अंचलों में प्रचलित ।
- वील बांस की पतली-पतली खपच्चियों को धागे से बाँधकर घोड़े की लीद मिली चिकनी मिट्टी से बनायी जाती है।
- यह वील विभिन्न आकार-प्रकार के खाने लिये होती है। इसे सुंदर बनाने के लिये इसमें कई छोटे-छोटे गवाक्ष, जालियाँ और कंगूरे बनाये जाते हैं।
- इन पर छोटे-छोटे काँच चिपकाये जाते हैं।
- इनमें दैनिक उपयोग की वस्तुएँ, बर्तन आदि सजाये जाते हैं।
- **जैसलमेर क्षेत्र में** एक से बढ़कर एक सौन्दर्यपूर्ण वील देखने को मिलती हैं।

कठपुतली

- **उदयपुर में** प्रसिद्ध
- धागों की सहायता से काष्ठ से बनी पुतलियाँ (कठपुतली) ।
- धागापुतली शैली राजस्थान की देन मानी जाती है।
- सिंहासन बत्तीसी, पृथ्वीराज संयोगिता और अमरसिंह राठौड़ जैसे खेल इन्हीं कठपुतलियों के द्वारा गाँव-गाँव, घर-घर दिखाये जाते रहे हैं।
- सन् **1965 में रूमानिया में आयोजित तृतीय अंतर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में उदयपुर** के भारतीय लोक कला मण्डल के कलाकारों ने **राजस्थान की इस कला में विश्व का प्रथम पुरस्कार प्राप्त** कर तहलका मचा दिया था।

अभ्यास प्रश्न

15 शब्दों वाले प्रश्न

1. चित्रशाला का परिचय दीजिए।
2. बूँदी शैली की कोई दो विशेषता बताइए।
3. 'निसारदीन'
4. बनी-ठनी
5. सूरतखाना
6. पिछवाईयों' से आप क्या समझते हैं?

(RAS MAINS 2016)

7. गोड़लिया से आप क्या समझते हैं?
8. 'सार्या' से आप क्या समझते है?
9. मांडणा' के चार विषयों के नाम लिखिए।
10. 'पाने' क्या हैं?
11. ग्रामीण अंचल में 'कोठियाँ' किस उपयोग में आती हैं?

50 शब्दों वाले प्रश्न

1. नाथद्वारा चित्रशैली की विशेषताएँ बताइए।
2. राजस्थानी चित्रकला की विभिन्न शैलियों का वर्गीकरण कीजिये।
3. किशनगढ़ शैली की विशेषताएँ बताइये।
4. राजस्थानी चित्रकला की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।
5. कठपुतली कला पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
6. कोटा एवं बूँदी शैली की मुख्य विशेषताएँ बताइए।
7. किशनगढ़ शैली एवं बूँदी शैली की समानता एवं असमानता का उल्लेख कीजिए। **(RAS MAINS 2016)**
8. मंदिर वास्तुकला में राजसिंह शैली की विशेषताओं का परिक्षण कीजिए। **(RAS MANIS 2021)**

100 शब्द वाले प्रश्न

1. राजस्थानी चित्रकला की विभिन्न शैलियों की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
2. चित्रकला की 'मारवाड़ स्कूल' पर एक विस्तृत आलेख लिखिए।
3. फड़ कला पर एक लेख लिखिए।
4. कावड़ के विभिन्न विषयों का उल्लेख करते हुए इस कला पर प्रकाश डालिए।
5. आमेर और अलवर चित्रकला शैली की विशेषताओं परिक्षण कीजिए।

2 CHAPTER राजस्थान के हस्तशिल्प

राजस्थान में मूर्तिकला

- राजस्थान में मूर्तिकला की शुरूआत मौर्य काल से हुई।
- राजस्थान के अलग-अलग इलाके अलग-अलग रंग के पत्थरों के लिए मशहूर हैं।
- जिस राज्य में पत्थरों की इतनी सारी किस्में हैं, वहाँ प्रगतिशील मूर्तिकला होना तय है।

विभिन्न पत्थर

- डूँगरपुर - हरा काला
- धौलपुर - लाल
- भरतपुर - गुलाबी
- मकराना - सफेद
- जोधपुर - बादामी/भूरा/बफ़
- राजसमंद - काले रंग के साथ सफेद
- जालौर - ग्रेनाइट
- कोटा - स्लेट

संगमरमर

- संगमरमर की मूर्तिकला – जयपुर
- सफ़ेद संगमरमर की मूर्तियाँ – जयपुर
- काले संगमरमर की मूर्तियाँ - तलवाडा (बाड़मेर)
- लाल पत्थर की मूर्तियाँ – थानागाजी (अलवर)
- संगमरमर पर मीनाकारी - जयपुर
- संगमरमर पर पिचकारी- भीलवाड़ा
- संगमरमर खदान - मकराना

पत्थर की मूर्ति

- सोमपुरा जाति के लोगों द्वारा डूँगरपुर और तलवार (बाँसवाड़ा में) तलवाड़ा मूर्तिकला।

टेराकोटा या मृण शिल्प (मोलेला, राजसमन्द)

(RAS MAINS 2016)

- टेराकोटा का अर्थ - पकी हुई मिट्टी।
- पक्की मिट्टी का उपयोग करके मूर्तियाँ आदि बनाने की कला को टेराकोटा के नाम से जाना जाता है।
- मोलेला तथा हरजी दोनों ही स्थानों में कुम्हार **मिट्टी में गधे की लीद मिलाकर मूर्तियाँ बनाते** हैं व उन्हें **उच्च ताप पर पकाते हैं।**
- नाथद्वारा के निकट **मोलेला** अपने टेराकोटा खिलौनों के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है।
- जालौर (हरजी गाँव) – मामाजी घोड़ों के लिए प्रसिद्ध
- नागौर - बनुरावता गाँव
- मोलेला के **शिल्पी मोहनलाल** इस कला के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके है

ब्लू पॉटरी(जयपुर)

- उत्पत्ति - सबसे पहले मंगोल कारीगरों द्वारा विकसित ।
- फारसी सजावटी कला के साथ चीनी ग्लेज़िंग तकनीक को जोड़ा।
- जयपुर में **ब्ल्यू पॉटरी निर्माण की शुरुआत का श्रेय महाराजा रामसिंह** (1835-80 ई.) को है।
- उन्होंने **चूडामन और कालू कुम्हार** को पॉटरी का काम सीखने दिल्ली भेजा और प्रशिक्षित होने पर उन्होंने जयपुर में इस हुनर की शुरुआत की।
- बाद में कृपालसिंह शेखावत ने इस कला को देश-विदेश में पहचान दिलाई।

ब्ल्यू पॉटरी का निर्माण-

- इसके लिए **पहले बर्तनों पर चित्रकारी** की जाती है।
- फिर इन पर **एक विशेष घोल चढ़ाया** जाता है।
- यह घोल हरा काँच, कथीर, साजी, क्वार्ट्ज पाउडर और मुल्तानी मिट्टी से मिलाकर बनाया जाता है।
- चित्रकारी का प्रारूप तो बर्तनों पर पहले ही हाथ से बना लेते हैं
- किन्तु यदि लाइनें खीचनी हों तो चाक, पर रखकर ही लाइनें खींची जाती है।
- ब्लू पॉटरी के रंगों में नीला, हरा, मटियाला और ताम्बाई रंग ही विशेष रूप से काम में लेते हैं।

- तुर्क और मुगलों की विजय के साथ भारत आया।
- जयपुर प्रसिद्ध है।
- राजा मानसिंह प्रथम के शासनकाल में शुरू हुई।
- विकास का श्रेय - सवाई रामसिंह द्वितीय (1835-80) को जाता है।
- 1950 ई. तक ब्लू पॉटरी गायब हो गई।
- स्वतंत्रता के बाद, **कृपालसिंह शेखावत** के प्रयासों से पुनर्विकास किया गया।
    - उनके प्रयासों को भारत सरकार द्वारा मान्यता मिली, **पद्मश्री (1974**) प्राप्त।

- वर्तमान में **गोपाल सैनत्रिलोकचंद, भगवान सहाय, दुर्गालाल, हनुमान सहाय** जाने माने कलाकार है।
- **ब्लैक पॉटरी** - कोटा की प्रसिद्ध है।
- **कागजी पॉटरी** अलवर व जयपुर की प्रसिद्ध है।
- **सुनहरी पॉटरी** - बीकानेर की प्रसिद्ध है।

हाथी दाँत पर हस्तशिल्प (उदयपुर)

- वस्तुओं में शामिल - आभूषण, पाउडर बॉक्स, आभूषण बॉक्स, कफ़लिंक लैंप, कलात्मक सजावट, देवी-देवताओं की मूर्तियाँ, ब्रोच।
- उदयपुर - सबसे प्रसिद्ध है।
- जोधपुर - काली, हरी और लाल पट्टियों की चूड़ियाँ।

मीनाकारी (जयपुर)

- मानसिंह प्रथम (1589-1614) - पहली बार मीनाकारी कला लाहौर से लाये।
- परम्परागत रूप से सोने पर मीनाकारी के लिए काले, नीले, गहरे, पीले, नारंगी और गुलाबी रंग का प्रयोग किया जाता है।
- **लाल रंग बनाने में जयपुर के मीनाकार** कुशल हैं।
- मीनाकारी का कार्य मूल्यवान, अर्द्धमूल्यवान रत्नों तथा सोने-चाँदी के आभूषणों पर किया जाता है।
- मीनाकारी में फूल-पत्ती, मोर आदि का अंकन प्रायः किया जाता है।
- सोने के आभूषणों के अतिरिक्त चाँदी के खिलौनों व आभूषणों पर भी मीनाकारी की जाती है।
- **नाथद्वारा भी** मीनाकारी का प्रसिद्ध केन्द्र है।
- **कोटा के रेतवाली क्षेत्र में काँच पर विभिन्न रंगों से** मीनाकारी का काम किया जाता है।
- **बीकानेर और प्रतापगढ़** में भी यह काम दक्षता के साथ किया जाता है।
- **जयपुर** दुनिया भर में प्रसिद्ध।
- **कुदरत सिंह** को मीनाकारी के लिए 1988 में **पद्मश्री से** नवाजा गया।

धातु तथा पत्थर पर मीनाकारी

- **पीतल पर मीनाकारी** के लिए **जयपुर एवं अलवर** प्रसिद्ध है। अलवर में पीतल पर मीनाकारी का कार्य सर्वाधिक होता है।
- **कागज जैसे पतले पत्थर पर मीनाकारी** के लिए **बीकानेर** के मीनाकार विश्व प्रसिद्ध है। **पुराने मीनाकारी की कारीगरी अधिक मूल्यवान** समझी जाती है। बीकानेर के **कलाकारों को उस्ताद** कहा जाता है।
- **मुरादाबादी का काम** - पीतल के बर्तनों पर **खुदाई करके उस पर कलात्मक नक्काशी** का कार्य मुरादाबादी का काम कहलाता है। **जयपुर में** यह कार्य बहुतायत से होता है। **अलवर में भी** यह कार्य प्रचलित है।

बादला – (जोधपुर)

- मरुस्थल में पानी को ठण्डा रखने के लिए जस्ते से निर्मित बर्तन पर कपड़े या चमड़े की परत चढाई जाती है। इस कलात्मक बर्तन को बादला कहते हैं। **जोधपुर में निर्मित** खूबसूरत रंगों तथा डिजाइनों में बने बादले काफी प्रसिद्ध हैं।

उस्ता कला

- **ऊँट की खाल पर स्वर्ण मीनाकारी और मुन्व्वत का कार्य 'ऊस्ता कला'** के नाम से जाना जाता है।
- इस कला का विकास पदमश्री से सम्मानित बीकानेर **के हिस्सामुद्दीन उस्ता** ने किया।
- ऊँट की खाल से बनी कुप्पियों पर स्वर्ण दुर्लभ मीनाकारी का कलात्मक कार्य आकर्षक और मनमोह लेने वाला होता है।
- शीशियों, कुप्पियों, आइनों, डिब्बों, मिट्टी की सुराहियों पर यह कला उकेरी जाती है।
- बीकानेर का **'कैमल हाइड ट्रेनिंग सेंटर' ऊस्तां कला का प्रशिक्षण संस्थान** है।

लाख का काम

- प्रसिद्ध - जयपुर और जोधपुर।
- सवाई माधोपुर, लक्ष्मणगढ़ (सीकर), इंद्रगढ़ (बूँदी) - लकड़ी के खिलौनों पर लाख का काम।
- जयपुर, हिंडौन, करौली - लाख की चूड़ियाँ।

थेवा कला

- **काँच पर सोने की मीनाकारी** को थेवा कला कहा जाता है।
- इसके लिए रंगीन बेल्जियम काँच का प्रयोग किया जाता है।
- अलग-अलग रंगों के काँच पर सोने की चित्रकारी इस कला का आकर्षण है।
- इस कला में नारी श्रृंगार के आभूषण एवं अन्य उपयोगी वस्तुएँ बनायी जाती है।
- इसके कारीगर पन्नीगर कहलाते हैं तथा इस कार्य को पन्नीगरी कहते हैं।
- यह विश्व में केवल प्रतापगढ़ जिले तक ही सीमित है। इस कला को जानने वाले शिल्पी "राज सोनी परिवार" राजस्थान के प्रतापगढ़ में ही रहते हैं।
- इस हस्तशिल्प कला को, ज्योग्राफ़िकल आइडेंटिफ़िकेशन टैग' (GI Tag) भी मिल चुका है।
- प्रसिद्ध कलाकार **महेश राज सोनी को राष्ट्रपति द्वारा 2014** में सम्मानित किया गया।

- **प्रमुख कलाकार**- महेश सोनी, रामप्रसाद सोनी, रामविलास सोनी, बेनीराम सोनी, जगदीश सोनी आदि।

कोफ्तगिरी

- **फौलाद अथवा लोहे पर सोने की सूक्ष्म कसीदाकारी** कोफ्त गिरी कहलाती है।
- यह **हथियारों को अलंकृत करने की कला है,** जो भारत में **मुगलों के प्रभाव के कारण उभरी** थी।
- इसका इस्तेमाल ढाल , तलवारों व खंजर और अन्य उपयोगी सामग्री जैसे डिब्बे, बक्से, भोजन काटने और खाने के कटलरी सामान, शिकार चाकू, छुरी इत्यादि के निर्माण में किया जाता है।
- इसमें **जडाव (इनले) और ओवरले दोनों प्रकार की कला** का कार्य होता है।
- इसके कलाकार को **कोफ़्तगार** कहा जाता है।
- कोफ्तगिरी **जयपुर एवं अलवर में** बहुतायत से होती है।

तहनिशां

- इसमें **डिजाइन को गहरा खोद कर उस खुदाई में पतला तार** भर दिया जाता है।
- **अलवर के तलवार साज** लोग तथा **उदयपुर के सिकलीगर** लोग इस कला से जुड़े हुए हैं।

कुंदन कला (जयपुर)

- राजस्थान की प्रसिद्ध हस्तकलाओं में से एक है।
- आभूषणों में नग जड़ने की कला **कुन्दन कला** कहलाती है।
- कुन्दन कला के लिए **जयपुर** प्रसिद्ध है।

गलीचे व दरिया

- **जयपुर और टोंक प्रसिद्ध**
- सूत और ऊन के ताने-बाने लगाकर लकड़ी के लूम पर गलीचे की बुनाई की जाती है।
- बुनाई में जितना बारीक धागा और गाँठे होती हैं, गलीचा उतना ही खूबसूरत एवं मजबूत होता है।
- जयपुर के **गलीचे गहरे रंग, डिजाइन और शिल्प कौशल** की दृष्टि से प्रसिद्ध है।
- गलीचा महंगा होने के कारण आजकल दरियों का प्रचलन अधिक है।
- **जयपुर और बीकानेर की जेलों में दरियाँ बनाई** जाती हैं। जोधपुर, नागौर, टोंक, बाड़मेर, भीलवाड़ा, शाहपुरा, केकड़ी और मालपुरा दरी-निर्माण के मुख्य केन्द्र हैं।
- **जोधपुर जिले के सालावास गाँव** की दरियाँ बड़ी प्रसिद्ध है।
- **लेटा खेसला उद्योग – जालौर का लेटा गाँव**
- **टांकला का दरी उद्योग – नागौर**
- कपड़ा बनाने के लिए कपास और ऊन का उपयोग किया जाता है।
- बेहतर गुणवत्ता और मजबूत गद्दे के लिए कपड़े बनाने के लिए इस्तेमाल होने वाले धागे और गाँठे बहुत महीन (पतली) होनी चाहिए।

नमदा

- **दरी और गलीचे के बीच का विकल्प** होता है।
- इसमें भेड़ की कच्ची ऊन काम में आती है।
- नमदा उत्पादन के लिए **टोंक जिला प्रसिद्ध** है।
- दौसा जिले के **लवाण गाँव में विकसित** दरी उद्योग अपनी कलात्मक बुनाई तथा रंगों की डिजाइन के लिए प्रसिद्ध है।

राजस्थान की कपड़ा कला

गोटा कार्य

- सोने व चाँदी के परतदार तारों से वस्त्रों पर जो कढ़ाई का काम किया जाता है उसे 'गोटा' कहते हैं।
- चुनरी में पतला गोटा जमीन में तथा चौड़ा गोटा जिसे लप्पा कहते हैं, आंचल में लगाया जाता है।
- कम चौड़ाई वाले गोटे को लप्पी कहते हैं।
- गोटा भी चौड़ाई के अनुसार चौमास्या, आठमास्या आदि प्रकार का होता है।
- **खण्डेला (सीकर) अपने गोटा** उद्योग के लिए प्रसिद्ध है।
- **लप्पा, लप्पी, किरण, बाँकड़ी, गोखरू, बिजिया, मुकेश, नक्शी** आदि गोर्ट के प्रमुख प्रकार हैं।
- इसके लिए जयपुर और खंडेला (सीकर) प्रसिद्ध है।

जरी कार्य

- जयपुर का प्रसिद्ध है।

कोटा डोरिया

- एक चौकोर चेक पैटर्न में कपास और रेशम के अनूठे मिश्रण वाला एक कपड़ा।
- रेशम-चमक प्रदान करता है ; कपास कपड़े को मजबूती प्रदान करता है ।
- उत्पत्ति - मैसूर में
- फिर **कोटा के निकट कैथून गाँव में** स्थानांतरित कर दिया गया।
- इसलिए, साड़ियों को **कोटा-मसूरिया** के नाम से जाना जाने लगा।

जयपुरी रजाई

- बहुत कम वजन लेकिन बहुत गर्म होती है।